ੴ १ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

जीवन : भक्त रविदास जी

जीवन और विचारधारा

लेखक :

डॉ. रूप सिंघ

डॉ. गुरशरणजीत सिंघ

लॉच करता

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Lunched By : Jasbir Singh
9988160484, 62390-45985
0172- 2696891

Type Setting By :
Radhe Shyam Choudhary
98149-66882

निःशुल्क सेवा : स्वयं पढ़े और अन्य लोगों को पढ़ाये।

Download Free

जीवन : भक्त रविदास जी

भक्त रविदास जी का समकालीन समाज जाति-पाति, कर्म-काण्डों और धार्मिक कट्टरता आदि के रोगों से पीड़ित था। एक तरफ जन साधारण विदेशी हकूमत की गुलामी सह रहे थे, तो दूसरी तरफ स्वदेशी ब्राह्मणवादी विचारधारा ने तथाकथित निम्न श्रेणियों को उनके धार्मिक तथा सामाजिक अधिकारों से भी वंचित किया हुआ था। ऐसे समय शुद्र जाति को धार्मिक तथा सामाजिक अधिकारों से भी वंचित किया हुआ था। ऐसे समय शुद्र जाति को धार्मिक विषयों पर बोलने या सुनने को अपराध माना जाता था। अछूत जाति के लोगों से तो पशुओं से भी ज़्यादा बुरा व्यवहार किया जाता था। कुत्ता तो कुएँ से पानी पी सकता था, पर अछूत नहीं। इन जातियों में से अगर कोई अध्यात्मिक ज्ञान-प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होता तो उसे कड़ी सज़ा दी जाती थी। यह कुछ सदियों से चल रहा था। यहाँ तक कि यह भी लिखा गया था कि मर्यादा प्रशोत्तम भगवान श्री राम चन्द्र जी के 'राम राज्य' में संबूक नाम के एक शुद्र को इस लिये कत्ल किया गया था कि वह 'राम' का नाम ले रहा था।

पुजारी और पुरोहित श्रेणी ने योजनागत ढंग से धार्मिक ग्रंथों में मानवता के बीच दीवारें खड़ी कर दी थीं। मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में लिखा गया कि अगर कोई दलित वेद-पाठ सुन ले तो उस के कान में सिक्का पिघला कर डाला जाना चाहिए और अगर वह मुँह से, वेद-मन्त्रों का उच्चारण करे तो उस की ज़ुबान काट दी जानी चाहिए। पुरोहित लोग अपनी मर्ज़ी से धर्म-ग्रंथों की व्याख्या करते थे। उन्होंने यह बात दृढ़ करवा दी थी कि दलित लोग नीच और घटिया होते हैं। इस मानवता-विरोधी धार्मिक शोषण के विरुद्ध मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन चलना, एक चमत्कार से कम नहीं था। बनारस ब्राह्मणवादी आन्दोलन और संस्कृति का केन्द्र था। यहीं से ही उसके विरोध में भक्ति आन्दोलन का आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन के दो मुख्य नेता भक्त कबीर और भक्त रविदास जी था। ये दोनों दलित श्रेणियों में से थे। भक्तों ने जाति-पाति की प्रथा को चुनौती दी और ब्राह्मणवादी विचारधारा का खण्डन किया। ब्राह्मण ने सारी श्रमिक श्रेणी को 'नीच' बना डाला था। यह प्रभु की लीला कही जानी चाहिए कि इस ब्राह्मणवादी विचारधारा को चुनौती इन दलित श्रेणियों में पैदा हुए, कुछ चुने हुए लोगों ने बनारस में से ही दी।

भक्त रविदास जी ऐसे भ्रष्ट सामाजिक प्रबन्ध में पैदा हुए। उन्होंने अछूत जाति पर किए जा रहे जुल्म को खुद सहा और फिर अपनी वाणी में दृढ़ता पूर्वक इसके विरुद्ध आवाज़ भी उठाई। उन्होंने अपने काम और जाति को छिपाया नहीं, बल्कि इसे डंके की चोट पर बताया।

भक्त रविदास जी ने जन्म स्थान, जन्म तिथि तथा श्वास त्यागने की तिथि आदि के बारे में कोई पक्की जानकारी न होने की वजह से, विद्वानों में मतभेद है। यद्यपि ज़्यादातर विद्वान भक्त जी का जन्म माघ सुदी 15, सवंत 1433 को मानते हैं। प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान भाई काहन सिंघ जी नाभा ने भक्त जी की जन्म-तिथि को माघ सुदी 15, संमत 1433 को मानते हुए भी, अंतिम रूप से कुछ कहने से संकोच किया है।

जहां तक जन्म स्थान का प्रश्न है, इसके बारे में कुछ विद्वान आप जी का जन्म स्थान राजस्थान में मानते हैं तो कुछ गुजरात भी मानते हैं पर इस प्रश्न का उत्तर भक्त जी की अपनी रचना से पक्के रूप में प्राप्त हो जाता है कि आप बनास या इसके आस-पास के रहने वाले थे:

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ।।

(श्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ: 1213)

उक्त पंक्ति में भक्त जी ने अपने पिता-पुरखी काम की भी पूर्ण रूप से जानकारी दी है। इस बात की पुष्टि भाई गुरदास जी की रचना से भी होती है:

जनु रविदासु चमारु होइ चहु वरना विचि करि वडिआई। (12 : 14)

छोटी उम्र से ही भक्त रविदास जी बुद्धिवान और मेहनती थे। कहा जाता है कि सात वर्ष की उम्र में ही भक्त रविदास जी नौधा भक्ति में पूरे प्रवीण हो गए थे। आप जी में दीन-दुखियों और ज़रूरतमंद लोगों की मदद और भलाई करने की भावना भरी हुई थी। जो कुछ आप को घर से मिलता था, उसे ज़रूरतमंद लोगों में बाट देते थे। भक्ति में लीन रहने के कारण आप घरेलू काम-काज में दिलचस्पी नहीं लेते थे। इसलिए घर वालों ने आप की शादी कर डाली। लेकिन इस गृहस्थी से उनके प्रभु-प्रेम में कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आप की धर्म-पत्नी और बच्चों के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। हां, यह पता चलता है कि आप को घर से निकाल दिया गया और आप गांव के बाहर एक झौंपड़ी में रहने लगे। वहां आप प्रभु का स्मरण करते और पिता-पुरखी काम से रोज़ी-रोटी का प्रबन्ध करते। इस तरह की सच्ची कमाई में से ज़रूरत मंदों की ज़रूरत पूरी करते। आप सभी के दुखों में हमदर्दी करते। इस लिए आप की लोकप्रियता बढ़ने लगी। आप की बढ़ती लोकप्रियता को देख कर, कट्टरपंथी ब्राह्मणों से यह सहा न गया और वह निराश होकर बादशाह के पास गए। उन्होंने शिकायत की कि रविदास नीच जाति से सम्बंधित होते हुए भी धार्मिक उपदेश देता है पर उनकी कोई पेश न गई। लोग दिन प्रतिदिन भक्त जी के श्रद्धालु बनते गए। यहाँ तक कि चितौढ़ की रानी झाली बाई भी आप के दर्शन हेतु आई और भक्त जी की शिष्य बन गई। इस बात की भी ब्राह्मण श्रेणी ने बुरा मनाया।

एक बार रानी झाली बाई के आमन्त्रण पर, भक्त रविदास जी चितौढ़ पहुँचे। रानी ने बहुत सारे स्थानीय ब्राह्माणों को भी भोजन के लिए आमंत्रित किया। ब्राह्मणों ने विरोध किया भक्त जी को अछूत होने के कारण पहले भोजन कराए जाने का। भक्त जी ने नम्रता प्रकट की और कहा कि "मैं भोजन आप के बाद ही करूंगा।" ब्राह्मणों ने भोजन शुरू किया तो सभी ब्राह्मण देखते हैं कि भक्त रविदास जी प्रत्येक ब्राह्मण के साथ बैठे भोजन कर रहे हैं। इस पर भक्त जी की श्रेष्ठता देख कर, सभी ब्राह्मण शर्मिन्दा हुए।

भक्त जी के जीवन के साथ कई चमत्कार जुड़े हुए हैं, जो कि बाद में श्रद्धालुओं ने जोड़ हैं जैसे गंगा माई द्वारा हाथ बाहर निकाल कर भेटा मांगना आदि। ये घटनाएं निश्चय ही भक्त रविदास जी की महिमा को बढ़ाने वाली हैं।

भक्त रविदास जी सामाजिक और संसारिक तौर से गरीब थे लेकिन अध्यात्मिक तौर से बहुत अमीर थे। उन्होंने अपना जीवन सादगी और सेवा में व्यतीत किया। आप की समूची विचारधारा जो आप की वाणी में से प्राप्त होती है, ने दलित श्रेणियों को विशेष तौर पर प्रभावित किया है। इस शक्तिशाली विचारधारा में ऐसा क्या था, इस पर विचार करना ही इस लेख का मुख्य विषय है।

भक्त रविदास जी की विचारधारा

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में भक्त रविदास जी के चालीस शब्द हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का संकलन, पाँचवें सिक्ख–गुरू गुरू अर्जुन देव जी ने स्वयं 1604 ई: में किया था। इस ग्रंथ की प्रमाणिकता के आधार पर विद्वानों का मत है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी से बाहर प्राप्त होने वाली, रविदास जी की और रचना की प्रमाणिकता संदिग्ध है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में प्राप्त भक्त रविदास जी की रचना से, उन की अध्यात्मिक, बण्सामाजिक और राजनीतिक विचारधारक की सही जानकारी मिल सकती है। परन्तु, पहले उनकी विचारधारा पृष्ठ–भूमि के बारे में भी विचार करनी चाहिए। कुछ विद्वानों ने भक्त रविदास जी को मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन से जोड़ते हुए, संत रामानंद को आप का गुरू बताया है। हम देखते हैं कि भक्त रविदास जी की रचना और जीवन पर काम करने वाले मुख्य विद्वान डा: मकलौड (1) डा: पदम (2) और कोलवर्ट (3) ने इस विचार पर सहमति नहीं दी। बल्कि डा: साबर ने तो यह लिखा है :

" ओहना दा गुरू पारब्रह्म परमेश्वर सी। (4) "

क्योंकि रविदास जी की प्रमाणीक रचना में संत रामानंद जी का कोई हवाला प्राप्त नहीं होता। इस विषय पर कुछ और विचार हमारे इस लेख के 'गुरू' वाले प्रकरण में भी होगी, पर यहां यह लिखना ठीक होगा कि भक्त जी ने जिन महापुरुषों से प्रेरणा ली, उनके नामों की जानकारी उन की अपनी रचना में से मिल जाती है:

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥

(श्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ 1106)

गुरू - अर्जुन देव जी ने भी भक्त रविदास जी का कोई देहधारी गुरू नहीं माना। वे लिखते हैं कि रविदास ने प्रमात्मा की प्राप्ति सत्संग से की है:

रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ।।

परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ।। (वही, पृ: 487)

इस तरह के हवाले स्पष्ट दिखाते हैं कि रविदास जी ने अपने अनुभव और साधना द्वारा ऊँची पदवी ग्रहण की।

भक्त रविदास जी को हम संगम लाल पाण्डेय (1) की तरह हिन्दु या वेदों के अनुकूल भी नहीं मानते। आप की रचना का बाहरमुखीय विश्लेषण करने वाले यह लिखते हैं:

''इस ग्रंथ (रविदास जी की बाणी) को देखने से तो यह भी पता चलता है कि रविदास जी की वेद - शास्त्रों में कोई भी आस्था न थी।''2

आप के बारे में कबीर जी का विचार है कि रविदास जी हरि के बिना किसी और में आस्था नहीं रखते थे:

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ।।

ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ।।

(श्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ : 1377)

ऐसा प्रतीत होता है कि रविदास जी ने किसी भी पूर्व - प्रचलित धर्म की विचारधारा को, अपनी विचारधारा का आधार नहीं बनाया। अपने जो अनुभव किया, वही अपनाया। इस तरह भक्त रविदास मौलिक विचारवान और नेता की हैसियत से उभरते दिखते हैं। उन्होंने अपनी विचारधारा पर दर्शन को भारी न होने दिया। उन्होंने वही कहा जो व्यावहारिक था, जो मानव जाति के हित में था।

1. **W.H. Meclcod : Guru Nanak and the Sikh Religion, P. 154**
2. **डा: पदम, गुरचरण सिंघ: संत रविदास: विचारक और कवि, पृ: 27 - 33**
3. **Winand M. Collewaert : The Life and works of Ravidas, P.25**
4. **जसबीर सिंघ साबर : भगत रविदास स्रोत पुस्तक (पंजाबी), पृ: 36**

1. **संगम लाल पाण्डेय: संत रैदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ: 47**
2. **रैदास जी की बाणी, पृ: 1**

अध्यात्मिक विचारधारा

भक्त रविदास जी के प्रमात्मा, जीव और मुक्ति संबंधी विचार निम्नलिखित हैं:

(1) **प्रमात्मा :**

सभी संतों ने प्रमात्मा से बिछुड़े जीव और उसके फिर प्रमात्मा से मिलाप के बारे में पदे लिखे हैं। ऐसा करते हुए, उन्होंने प्रमात्मा की महिमा और कृपा का वर्णन किया है। भक्त जी के सभी पद दैवी प्रेम के गीत हैं। भक्त रविदास जी के लिए प्रमात्मा कोई रहस्य नहीं, जिस के आस्तित्व पर संदेह किया जाए बल्कि वह तो प्रमात्मा को हर कण में देखते हैं:

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ।।

कनक कटिक जल तरंग जैसा ।। (वही, पृ : 93)

भक्त जी का कथन है कि एक प्रमात्मा से ही जगत का निर्माण हुआ है:

एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ

आन रे आन भरपूरि सोऊ ।। 1 ।। रहाउ ।। (वही, पृ: 1293)

इस जगत की अनेकता का मूल कारण एक प्रमात्मा को मान कर, रविदास जी ने बहुदेववाद को त्यागते हुए प्रमात्मा के तुल्य किसी भी देवी, देवते या अवतार आदि को इष्ट नहीं माना:

कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ।।

जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ।। (वही, पृ: 858)

यह भी लिखा है :

जह जह तहा तेरी सेवा ।।

तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ।। 4 ।। (वही, पृ: 659)

रविदास जी ने एक प्रसिद्ध पद में लिखा है कि **हिन्दु त्रै – मूर्ति (ब्राह्मा, विष्णु, शिव)** का कोई स्थान नहीं। भक्त जी का विचार है कि ये देवते हरी के नाम का जाप करने वाले भक्त से भी नीचे है:

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति

तास सम तुलि नही आन कोऊ ।। (वही, पृ: 1293)

सो, भक्त जी ने एक-ईश्वरवाद ने नजदीक बहुदेववाद या अवतारवाद को नहीं आने दिया। रविदास जी ने प्रमात्मा के निम्नलिखित गुणों को वर्णन किया है:

पतित पावन	:	जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ।।	
		पतित पावन नामु कैसे हुंता ।। 1 ।। रहाउ ।।	(वही, पृ : 93)
दयावान	:	हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि .... ।।	(वही, पृ : 694)
उपकारी	:	हम अउगन तुम उपकारी ।। 1 ।।	(वही, पृ : 486)
मुक्तिदाता	:	सोई मुकंदु मुकति का दाता ।।	(वही,पृ: 875)

(2) जीव :

भारतीय धर्मों में 'जीव' का कई तरह से ब्यान किया गया है। इसे आत्मा या जीवात्मा कहा जाता है। धर्म-ग्रंथों में बताया गया है कि ''यह न स्त्री है, न पुरुष है और न ही नपुंसक है। यह न पैदा होता है और न ही मरता है, बल्कि यह जिस शरीर से सम्पर्क करता है उसी तरह का हो जाता है।'' इसे निराकार, सर्वव्यापी और दु:ख-सुख से परे माना गया है। भक्त रविदास ने प्रमात्मा और जीव (आत्मा) में कोई भेद नहीं माना। वे बताते हैं कि जैसे सोने और सोने से बने गहने में और पानी और पानी की लहर में कोई अंतर नहीं होता, उसी तरह जीव और ब्रह्मा में भी कोई अंतर नहीं है:

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ।।

कनक कटिक जल तरंग जैसा ।। (वही, पृ: 93)

भक्त जी के अनुसार जीव रूपी 'पंखी', हड्डी-मांस के पिंजरे में रहता है:

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ।।

हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ।। (वही, पृ: 659)

यह एक सच्चाई है कि मनुष्य-देह कीमती है और इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

भक्त जी का कथन है :

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ।। (वही, पृ: 658)

रविदास जी एक जगह यह भी लिखते हैं :

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ।।

पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ।। 1 ।।

माधो अबिदिआ हित कीन ।।

बिबेक दीप मलीन ।। 1 ।। रहाउ ।।

त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ।।

मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ।। 2 ।। (वही, पृ: 486)

भाव यह है कि मृग, मच्छली, भँवरे, पतंगे और हाथी को एक-एक अवगुण के बदले दु:ख सहना पड़ता है, पर मनुष्य में तो पांच विकार हैं, उसका क्या हश्र होगा?अज्ञानता वश हमारी बुद्धि का दीप मद्धम है। भक्त जी ने हमें सावधान किया है कि भ्रम या अहंकार के कारण जीव खुद को प्रमात्मा से भिन्न मानने लगता है और जब अहंकार का नाश हो जाता है तो उस में और प्रमात्मा में कोई भेद नहीं रहता:

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ।।

अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ।। (वही, पृ: 657)

माया के प्रभाव में मनुष्य मन के पीछे लग जाता है :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ।।

देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ।। 1 ।। रहाउ ।।

जब कछु पावै तब गरबु करतु है ।।

माइआ गई तब रोवनु लगतु है ।। 1 ।। (वही, पृ: 487)

रविदास जी हमें शारीरिक नाशमानता की सच्चाई दृढ़ कराते हैं :

इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ।।

जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ।। 1 ।। रहाउ ।। (वही, पृ 794)

आसा राग के एक पद् में भक्त जी हमें पूछते हैं :

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ।।

बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ।। (वही, पृ: 487)

कड़वा सच तो यह है कि जब मनुष्य मर जाता है तो उसके सगे-सम्बन्धी भी उसके मुर्दा शरीर से नफरत करते हैं :

घर की नारि उरहि तन लागी ।।

उह तउ भूतु भूतु करि भागी ।। (वही, पृ : 794)

(3) जगत :

पुरातन धार्मिक मत, जगत और माया को समानर्थी बताते हैं। भक्त रविदास जी ने सिद्धांतक रूप में जगत को मिथ्या माना है। भक्त जी ने जगत की उपमा कसुंभे के फूल से की है :

जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ।।

मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ।। (वही, पृ 346)

भले ही जगत मिथ्या है, परन्तु इस जगत का निर्माता जन्म-मरण से बाहर है। उसके बिना संसार की प्रत्येक वस्तु नाशवान है :

बिनु देखे उपजै नही आसा ।।

जो दीसै सो होइ बिनासा ।। (वही, पृ: 1167)

भक्त जी ने जगत को सपने से भी तुलना दी है कि जैसे एक राजा सपने में भिखारी होकर दु:खी होता है, वैसे ही हम सच जानने के बाद, जगत के दु:खों को वैसे ही मिथ्या मानते हैं, जैसे वह राजा सपना टूटने के बाद अपने सपने की अवस्था को अस्थाई मानता है :

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ।।

अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ।। (वही, पृ: 657)

व्यवहारिक रूप से जगत कर्म-क्षेत्र है। इस विषय पर और चर्चा आगे होगी ।

(4) जीवन मनोरथ :

जीवात्मा की समस्या यह है कि वह अहंकार वश खुद को प्रमात्मा से भिन्न मानने लगती है। जब तक अहंकार को छोड़, बंधनों से छुटकारा नहीं पा लेती, तब तक यह प्रमात्मा से मिल नहीं सकती। भक्त रविदास जी ने इसी को जीवन मनोरथ कहा है:

सरीरु अराधै मो कउ बीचारु देहू ।।

रविदास सम दल समझावै कोऊ ।। (वही, पृ: 93)

भक्त रविदास जी प्रमात्मा से विनय करते हुए कहते हैं :

कहु रविदास परउ तेरी साभा ।।

बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ।। (वही, पृ: 345)

भक्त जी ने इसे 'खलास' अवस्था भी कहा है :

कहि रविदास खलास चमारा ।। (वही पृ : 345)

इस प्रकार जिस मुक्ति की बात कही गई है, वह जीवन-मुक्ति है। पर भक्त जी ने मौत के उपरांत मुक्ति की भी चर्चा की है:

पारु कैसे पाइबो रे ।।

मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ।।

जा ते आवा गवनु बिलाइ ।। 1 ।। रहाउ ।। (वही पृ: 346)

इस मौत के उपरांत प्राप्त होने वाली मुक्ति को प्राप्त इसी जीवन में करना है। एक और जगह यम से मुक्ति हासिल करने को भी जीवन-लक्ष्य कहा गया है:

तुमरे भजन कटहि जम फांसा ।। (वही, पृ: 659)

इसी संबंध में लिखा है:

मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ।। (वही, पृ 346)

परन्तु मनुष्य यह सब भूल कर कुमार्ग पर चल रहा है। रविदास जी चेतावनी देते हुए कहते हैं :

जो दिन आवहि सो दिन जाही ।।

करना कूचु रहनु थिरु नाही ।।

संगु चलत है हम भी चलना ।।

दूरि गवनु सिर उपरि मरना ।।

किआ तू सोइआ जागु इआना ।।

तै जीवनु जगि सचु करि जाना ।। 1 ।। (वही, पृ : 793)

यह जीवन दुर्लभ है। इसका उपयोग सामाजिक मुक्ति के लिए योजना-बद्ध ढंग से करना चाहिए। यह जीवन बड़ा छोटा है। परन्तु जिन लोगों ने इसे अनुशासन में ढाल लिया, उन्होंने बड़ी प्राप्तियां कीं। वरना समय व्यर्थ करने वाले, समय की कमी की शिकायत करते ही यहां से चले जाते हैं।

जीवन – लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग :

उपरोक्त जीवन – लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, भक्त रविदास जी ने नीचे दिये मार्ग बताए हैं:

(क) नाम – स्मरण (ख) गुरू (ग) ज्ञान (घ) सत्संग

(ङ.) सदगुण धारण करना (च) अवगुणों का त्याग करना। भक्त

(क) नाम – स्मरण

भक्त रविदास जी ने जिज्ञासु से पहली मांग आत्म – स्मर्पण की की है। उन्होंने इसे 'शरण' भी कहा है:

कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ।।

जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ।। (वहीं पृ: 793)

रविदास जी का मानना है कि जिन्हें प्रमात्मा की शरण मिल गई, वे पापों के भार से मुक्त हो जाते हैं:

जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ।। (वहीं, पृ: 858)

धनासरी राग के पदे में भक्त जी आत्म – स्मर्पण करते हुए विनय करते हैं:

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ।। (वही, पृ : 698)

भक्त रूपी सुहागन को प्रमात्मा के आगे तन – मन अर्पण कर देने को कहा है:

तनु मनु देइ न अंतरु राखै ।। (वहीं पृ: 793)

डा. दर्शन सिंह ने रविदास – वाणी का अध्ययन करते हुए लिखा है कि बुद्ध मत में बुद्ध बनने के लिए महात्मा बुद्ध, धर्म तथा संघ की शरण लेनी पड़ती है। उसी तरह रविदास ने भी प्रमात्मा, नाम और सतसंग की शरण मांगी हैं (1)।

भक्त जी ने जीवन – मुक्ति का आधार प्रभु की आराधना को माना है। हरि का जाप करने से इस संसार – सागर से पार हुआ जा सकता है:

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ।।

हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ।। (वही, पृ. 486)

कलयुग में केवल नाम – मार्ग ही कारगर साधन है :

'....... कलि केवल नाम अधार ।।' (वही, पृ. 346)

भक्त जी कहते हैं कि व्यास ऋषि ने पुराणों और वेदों को पढ़ने विचारने के पश्चात् यह कहा कि ये सभी धर्म – ग्रंथ 'नाम' के तुल्य नहीं :

नाना खिआन पुरान बेद बिधि उचतीस अछर माही ।।

बिआस बीचारि कहिओ मरमारथु राम नाम सरि नाही ।। (वही, पृ. 1106)

रविदास जी ने अपना जीवन – अनुभव दिया है कि मैं भी इसी के सहारे भव – सागर से पार हो गया हूँ:

कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ।।

हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ।। (वही, पृ. 794)

यह नाम क्या है? इस का स्पष्ट उत्तर रविदास जी ने नहीं दिया। पर, यह जरूर लिखा है कि नाम – मार्ग सहज – मार्ग है :

हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ।।

मै राम नाम धनु लादिया बिखु लादी संसारि ।। (वही, पृ. 346)

इस सहज – क्रिया का वर्णन इन शब्दों में किया है :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो

स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ।।

मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ

रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ।।2।। (वही, पृ. 694)

भक्त जी का यह विचार स्थापित धर्म पर एक चोट थी। क्योंकि नाम – स्मरण के बगैर किए जाने वाले कामों का रुहानीयत से कोई सम्बंध नहीं है। उल्टा यह कर्म – काण्ड मनुष्य का अहंकार बढ़ाते हैं, जो रुहानी उन्नती में रुकावट खड़ी करते हैं। इन व्यर्थ के कर्म – काण्डों का रविदास जी की वाणी में खण्डन किया गया है:

बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ।।

कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ।।2।।

– –

बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबधि बिकार ।।

सुध कवन पर होइबो सुच कुँचर बिधि बिउहार ।। (वही, पृ. 346)

भक्त जी ने पत्थर के ठाकुर और देवताओं के खुश करने के लिए चढ़ाई जाने वाली सामग्री पर भी व्यंगात्मक टिप्पणी की है:

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ।।

फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ।। 1 ।।

माई गोबिन्द पूजा कहा लै चरावउ ।।

अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ।। 1 ।। रहाउ ।।

मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ।।

बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ।।2।।

धूप दीप नईबेदहि बासा ।।

कैसे पूज करहि तेरी दासा ।।3 ।। (वही, पृ. 525)

पूजा की असल विधि आत्म-सर्म्पण ही है। भक्त जी का कथन है: -

तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ।।

गुर परसादि निरंजनु पावउ ।। (वही)

भक्त जी ने कर्म-काण्डों की जगह केवल 'नाम की ही महिमा की है:

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ।। हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ।। 1 ।। रहाउ ।।

नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ।।

नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ।। 1 ।। (वही, पृ. 694)

नाम का महातम भक्त कबीर और नामदेव जी की उदाहरण से भी दृढ़ करवाया गया है:

हरि के नाम कबीर उजागर ।।

जनम जनम के काटे कागर ।। 1 ।।

निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ।।

तउ जग जनम संकट नही आइआ ।। 2 ।। (वही, पृ. 487)

नाम - स्मरण प्रभु - प्यार में से पैदा होता है। भक्त रविदास जी ने मच्छली की उदाहरण देकर यह बात बताई है:

मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ।।

खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ।। (वही, पृ. 658)

भक्त रविदास जी ने प्रभु - भक्ति को ब्यान करते हुए, प्रभु - प्रेम को बड़ा महत्त्व दिया है। भक्त जी प्रेम - भक्ति के समर्थक इस कारण थे कि भक्त और प्रभु की प्रीत या सम्बन्ध एक - पक्षीय न हो। उदाहरण के लिए जैसे मच्छली और पानी, पतंगे और दीप, चकोर और चांद का प्यार होता है। बल्कि यह प्यार दो - तरफा हो। जैसे माता और बच्चे का या पति और पत्नी का होता है। भक्त जी का प्रभु - प्यार भी दो - तरफा था। इसका प्रमाण उनकी रचना से मिल जाता है:

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ।।

कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ।। (वही, पृ. 487)

(ख) गुरू :

गुरू, शिष्य की अध्यात्मिक अगवानी करने वाला मार्गदर्शक है। धर्म में गुरू का बड़ा महत्त्व है। भक्त रविदास जी के गुरू की चर्चा संक्षेप में हम पहले ही कर चुके हैं। भक्त जी जिस गुरू की बात करते हैं, वह प्रमात्मा ही है। प्रमात्मा, भक्तों को स्वयं रास्ता दिखाते हैं। इसलिए प्रमात्मा को जगत - गुरू कहा है:

तुम कहीअत हो जगत गुर सुआमी ।। (वही, पृ. 710)

जीव को चाहिए कि वह इस गुरू पर निर्भर रहे। उसकी कृपा के बिना नरक रूपी जीवन से छुटकारा संभव नहीं। रविदास जी का कथन है :

जन रविदास राम रंगि राता ।।

इउ गुर परसादि नरक नही जाता ।। (वही, पृ. 487)

इस तरह प्रभु - कृपा या गुरू - कृपा के बिना जीव अपनी मंज़िल पर नहीं पहुंच पाता। गुरू को पारस कहा है जो तांबे (मनमुख) को सोना (गुरमुख) बना देता है:

पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ।।

परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ।। (वही, पृ. 346)

रविदास जी ने गुरू-कृपा की इस प्रकार की महिमा इसलिए की है कि कहीं मनुष्य अहंकार में न आ जाए और यह न समझ बैठे कि वह स्वयं अपने बल-बूते पर प्रमात्मा को पा सकता है।

(ग) ज्ञान

धर्म अन्धविश्वास का नहीं, बल्कि सही ज्ञान का नाम है। इसलिए अज्ञानता को ही जीव और प्रमात्मा में पैदा हुई दूरी का मूल कारण माना गया है। इस वजह से अज्ञानता को दूर करके सच्चे ज्ञान को धारण करना चाहिए। सच्चे ज्ञान से ही मनुष्य को पता चलता है कि यह जगत झूठा है और वह यह भी जान लेता है कि जगत के रसों में फँस कर जीवन व्यर्थ हो जाता है। सच्चे ज्ञान से ही यह बोध होता है कि जीव अपनी मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है। भक्त रविदास जी ने ज्ञान के महत्त्व को इस तरह ब्यान किया है:

माधो अबिदिआ हित कीन ।।

बिबेक दीप मलीन ।। (वही, पृ. 486)

(घ) सत्संग :

सच्चे धार्मिक लोगों के समुह को सत्संग कहा जाता है। सत्संग, नए श्रद्धालुजनों के लिए पाठशाला का काम करता है। यह सर्वविदति है कि **'जैसी संगत वैसी रंगत'।** मनुष्य के आचरण का निर्माण उसकी संगत द्वारा होता है। भक्त रविदास जी ने ऊँचे आचरण वाले, सच्चे धार्मिक लोगों या भले लोगों और प्रमात्मा को एक ही माना है:

संत अनंतहि अंतरु नाही ।। (वही)

इन ऊँचे लोगों के बारे में यह भी लिखा है :

जिन कुल साधु बैसनौ होइ ।।

बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ।। 1 ।। रहाउ।।

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ।।

होइ पुनीत भगवंत भजन त आपु तारि तारे कुल दोइ ।। 1 ।।

धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ।।

जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ।। 2 ।।

पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ।।

जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥ 3 ॥ (वही, पृ. 858)

भक्त जी के लिए सच्चा धार्मिक पुरुष पण्डित, योद्धा, राजा आदि से भी ऊँचा होता है, क्योंकि उसने प्रभु के नाम का रस सेवन किया है जिससे वह खुद को पार लगा ही लेता है, कई औरों को भी भव-सागर से पार करा लेता है। भक्त रविदास जी का यह दृढ़ विश्वास है कि ऐसे भले पुरुषों की संगत के बिना प्रभु-प्यार पैदा नहीं होता:

साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै

भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ (वही, पृ. 694)

भक्त जी का मत है कि महान पुरुषों की शरण लेने से मनुष्य के असंख्य पाप नाश हो जाते हैं:

साधू की जउ लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप सब कोटि कोटि ॥ (वही, पृ. 1196)

मलार राग में लिखे एक पद में भक्त रविदास जी लिखते हैं कि उनका उद्धार साध की संगत द्वारा हुआ है :

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥

साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ (वही, पृ. 1293)

इसीलिए रविदास जी विनय करते हैं :

माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥

हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥ 2 ॥ (वही, पृ. 486)

(ड.) सदगुण धारण करना :

नैतिकता का धर्म से नज़दीकी नाता है। बिना नैतिकता धारण किये, कोई धर्मी नहीं हो सकता। जब हम नैतिकता की बात करते हैं तो हमारे मन में सदगुण धारण करने की बात होती है। गुरू नानक जी का भी विचार था कि बिना सदगुण धारण किये, प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती:

विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ (वही, पृ. 4)

भक्त रविदास जी ने सभी बुराईयों का मूल मन को माना है, क्योंकि मन दुबिद्धा का शिकार है। रविदास जी लिखते हैं :

सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ।। बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ।।

मन का सुभाउ सभु कोई करै ।। करता होइ सु अनभै रहै ।। 2 ।। (वही, पृ. 1167)

जीव को मन, वचन और कर्म से होने वाली बुराईयों से बचना चाहिए :

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ।। (वही, पृ. 487)

और संतों के मार्ग पर चलना चाहिए :

संत आचरण संत चो मारगु .... ।। (वही, पृ. 486)

भक्त रविदास जी ने मुख्य रूप से प्रेम, दया और सेवा के सदगुण धारण करने की ज़रूरत जताई है। मनुष्य प्रमात्मा द्वारा बनाया हुआ है। इसलिए प्रमात्मा से प्रेम का भाव है कि मनुष्य जाति से प्रेम करना है। भक्त जी ने प्रेम को प्राथमिकता दी है:

प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ।। 1 ।। (वही)

इस प्रेम के कारण ही दया का जन्म होता है। दया धर्म की माता है। गुरू नानक जी ने लिखा है :

धौलु धरमु दइआ का पूतु ।। (वही, पृ. 3)

जहां दया नहीं, वहां धर्म नहीं ठहर सकता। इसलिए रविदास जी हमें क्रोध त्याग कर, दया धारण करने का उपदेश दे रहे हैं:

'........ कोपु करहु जीअ दइआ ।।' (वही, पृ. 658)

प्रेम और दया के गुण मनुष्य में परोपकार का भाव पैदा करते हैं। गुरू अर्जुन देव जी ने परोपकार को धार्मिक मनुष्य की निशानी बताया है :

ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ।। (वही, पृ. 273)

परोपकार को सेवा भी कहा जाता है। अपने हित को पीछे धकेलते हुए, दूसरों की भलाई के लिये किया गया श्रम सेवा कहलाता है। मनुष्य दूसरों के दु:ख - दर्द और समस्या को अपना माने। रविदास जी लिखते हैं:

सो कत जानै पीर पराई ।।

जा कै अंतरि दरदु न पाई ।। 1 ।। (वही, पृ. 793)

भक्त जी हमें दूसरों की सेवा करने का उपदेश दे रहे हैं।

(च) अवगुणों का त्याग :

जहां सदगुण धारण करने चाहिए, वहीं पर मनुष्य को कुछ अवगुण भी छोड़ने चाहिए। ये अवगुण मनुष्य की अध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति में बाधा खड़ी कर देते हैं। भक्त रविदास जी ने हमें अपनी पवित्र वाणी में आगे लिखे अवगुण त्यागने को कहा है:

दुबिद्धा :

सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ।।

बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ।। (वही, पृ. 1167)

भ्रम :

(क) **माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ।।**

जैसे मानीऐ होइ न तैसा ।। (वही, पृ. 657)

(ख) **भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ।।** (वही, पृ. 346)

अंहकार :

(क) **जब कछु पावै तब गरबु करतु है ।।**

माइआ गई तब रोवनु लगतु है ।।1।। (वही, पृ. 487)

(ख) **जब हम होते तब तू नाही ...... ।।** (वही, पृ. 657)

(ग) **सह की सार सुहागनि जानै ।।**

तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ।।" (वही, पृ. 793)

पाप :

अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ।।

जणी लखावहु असंत पापी सणि ।। 3 ।। (वही, पृ. 486)

विकार :

(क) **भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ।।** (वही, पृ. 346)

(ख) **म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ।।**

पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ।। (वही, पृ. 486)

(ग) '....... कोपु करहु जीअ दइआ ।।' (वही, पृ. 658)

निन्दा :

जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ।। जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ।।

जो ओहु कूप तटा देवावै ।। करै निन्द सभ बिरथा जावै ।। (वही, पृ. 875)

सामाजिक विचारधारा

यह बात सही है कि भक्त रविदास जी मुख्य रूप में अध्यात्मिक पुरुष थे। यद्यपि उनकी सारी वाणी का अध्ययन करने से यह तथ्य प्रगट होता है कि सामाजिक मुक्ति भी उनका लक्ष्य था। इसी कारण रविदास जी असहाय लोगों और दीन-दुखियों के मसीहा बन गए। आप जी की वाणी में से क्रांति और संघर्ष की प्रेरणा मिलती है। इसी बात के लिए ही आप की वाणी को सिक्ख गुरूओं ने सम्मान पूर्वक लिया। सिक्ख आंदोलन भी दलित और शोषित लोगों की आज़ादी चाहने वाला आन्दोलन है। सिक्ख गुरू साहिबान ने भक्ति आंदोलन को वैज्ञानिक और अच्छे ढंग से निरंतरता दी। यही कारण था कि दलित और श्रमिक लोग तेजी से सिक्ख आंदोलन में शामिल हो गए। रविदास जी ने पूर्व-प्रचलित धार्मिक संस्थाओं को पूरी तरह से रद्द करके, ब्राह्मणवादी जाति-प्रथा पर जोरदार प्रहार किया। भक्त रविदास जी चमार जाति के थे। अछूतों की दशा शुद्रों से भी बदतर थी। पर, रविदास जी को अपने चमार होने पर न तो कोई अफसोस था और न ही हीन-भावना। वे तो पुकार कर कहते हैं:

(क) राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ।। (वही, पृ. 476)

(ख) प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ।। (वही, पृ. 346)

यह जन्म किसी के अपने वश में नहीं, फिर क्यों छोटी जाति में पैदा होने के कारण दिल छोटा हो? काम अगर नेकनियती से किया जा रहा हो, तो काम कोई भी हो, इससे हीन-भावना नहीं लानी चाहिए। काम बड़ा-छोटा नहीं होता, काम ठीक या गलत होता है जो कि मनुष्य की ईमानदारी पर निर्भर करता है। भक्त जी मरे हुए पुशओं के मृतक शरीर और पिंजर ढोने का काम करते थे। इसकी वर्णन उन्होंने स्वयं किया है:

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि ....।। (वही, पृ. 1293)

रविदास जी ने हिन्दू धर्म की जाति -प्रथा को अबदल नहीं माना। उनका विचार है कि प्रमात्मा के लिए इस व्यर्थ की प्रथा का कोई स्थान नहीं :

मेरी जाति हूए दरबारि ।। (वही, पृ. 875)

रविदास जी ने तथाकथित छोटी जाति के लोगों को झिंझोड़ा और समझाया कि छोटी जाति वाले बाल्मिकी जी राम जी को भक्ति के कारण, चंडाल, कृष्ण जी से प्रेम करके, अजामल और पिंगुला (वेसवा) सभी हरि की शरण में जाने से प्रभु के दरबार में स्वीकार हुए थे, तो आप क्यों नहीं स्वीकार हो सकते हैं?

रे चित चेति चेत अचेत ।। काहे न बालमीकहि देख ।।

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ।।1।। रहाउ।।

सुआन सत्रु अजातु सभ तो क्रिस्न लावै हेतु ।।

लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ।।2।।

अजामलु पिंगुल लुभतु कुँचरु गए हरि कै पासि ।।

ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ।।3 ।। (वही, पृ. 1124)

प्रभु के दरबार में सभी बराबर हैं:

ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ।।2।। (वही, पृ. 875)

भक्त जी ने नीच से ऊँच होने की विधि बताते हुए लिखा है:

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ।।

नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ।। (वही, पृ. 476)

रविदास जी ने शोषित और अनमानित वर्गों को बताया कि जाति -पाति किसी मनुष्य की अध्यात्मिक या सामाजिक उन्नति को प्रभावित नहीं कर सकती। रविदास जी के इन विचारों ने निचली श्रेणियों के लोगों में मुक्त होने की इच्छा को बढ़ाया। भक्त जी ने दलितों को समाज में परिवर्तन का सूत्र दिया:

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ।।

रिदै राम गोबिन्द गुन सारं ।। 1 ।। रहाउ ।।

सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं ।।

सुरा अपवित्र नत अवर जल रे

सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ।।1।।

तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं।।

भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ।।2।।

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा।।

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति

तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ।। 3 ।। (वही, पृ. 1293)

जैसे शराब तो अपवित्र है, पर अगर इसे गंगा-जल में मिला दिया जाए तो इससे वह अपवित्र नहीं होता, इसी तरह ताड़ का वृक्ष अपवित्र होता है, पर इसके बने कागज़ पर प्रभु गीत लिखे जाते हैं। भक्त जी बताते हैं कि उनका जन्म नीच कुल में हुआ ज़रूर था, पर प्रभु के नाम का जाप करने से बड़े-बड़े ब्राह्मण उन्हें नमस्कार करते हैं। इन प्रवचनों ने दलित श्रेणियों को कुछ करने की प्रेरणा दी। इस शिक्षा से इन वर्गों में से हीनता-भाव खत्म होने लगा और इससे उन्हें सामाजिक-मुक्ति की चेतना मिली।

\- - - - - -

राजनीतिक विचारधारा

भक्त रविदास जी की वाणी को, अभी इस दृष्टि से बहुत कम देखा गया है। इसके संभवत: दो कारण हो सकते हैं। पहला यह कि उच्च श्रेणियों के लोग आज भी यह सहन नहीं करते कि कोई अछूत उन्हें राजनीतिक अगवाई दे। दूसरा कारण यह है कि रविदास जी की वाणी में आज का प्रचलित राजनैतिक मुहावरा नहीं मिल पाता। हमें एक बात समझ लेनी चाहिए कि रविदास जी आज से 600 वर्ष पहले हुए हैं, और उनसे यह ज़्यादती होगी कि हम उनसे आधुनिक मापदण्डों वाली राजनीतिक विचारधारा की आशा करें। रविदास जी ने अपने समकालीन भक्तों से अधिक विशाल, मौलिक और स्पष्ट रूप में राजनीतिक विचार दिए हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में शामिल उनके दो शब्द सिक्ख पंथ को आज भी प्रेरणा देते हैं। पहला शब्द है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।।

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ।।1।।रहाउ ।।

जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुही ढरै ।।

नीचह ऊच करै मेरा गोबिंद काहू ते न डरै ।।1।। (वही, पृ. 1106)

इस पद में भक्त जी ने 'छत्र' शब्द का प्रयोग करके, मध्याकालीन मुहावरे में कहा है कि दलित वर्ग को राजकीय कामों में भाग लेने का पूरा-पूरा अधिकार है। इस तरह भक्त रविदास जी ने राजनीतिक दृष्टिकोण से लोकतांत्रिक व्यवस्था के पक्ष में अपना मत दिया है।

दूसरे पद में राज्य का यह आदर्श बताया है कि राज्य में किसी को कोई दु:ख-तकलीफ न हो, राजा अयोग्य कर न लगाए, यहां नागरिकों के जान-माल की पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन हो, राज्य शक्तिशाली हो और उसे किसी अन्दरूनी या बाहरी खतरे का डर न हो, लोगों को किसी बात की कोई कमी न हो, नागरिकों के सुख आराम का पूरा ध्यान रखा जाए और सभी को आज़ादी हो :

बेगम पुरा सहर को नाउ ।। दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ।।

नां तसवीस खिराजु न मालु ।। खउफु न खता न तरसु जवालु ।।1।।

अब मोहि खूब वतन गह पाई ।। ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ।।1।। रहाउ ।।

काइमु दाइमु सदा पातिसाही ।। दोम न सेम ऐक सो आही ।।

आबादानु सदा मसहूर ।। ऊहां गनी बसहि मामूर ।।2।।

तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ।। महरम महल न को अटकावै ।।

कहि रविदास खलास चमारा ।। जो हम सहरी सो मीतु हमारा ।।3 ।। (वहीं, पृ. 345)

इस प्रकार भक्त रविदास जी ने लोक-नेता और क्रांतिकारी नेता के रूप में जहां समाज की बुराईयों का वर्णन किया, वहीं इन बुराईयों के कारणों को समझते हुए सामाजिक मुक्ति का आदर्श भी रखा। राजनीतिक दृष्टि से भी उन्होंने अपने समय के लोगों को शिक्षित किया। उनकी यह विचारधारा आज भी हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि संसार के असहाय, पीड़ित और पिछड़े लोगों का मार्ग-दर्शन कर सकती है। यही उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता को उजागर करने वाला बिन्दु है।

\- - - - - -

सिक्ख पंथ में भक्त रविदास जी का स्थान

सिक्ख पंथ एक मौलिक और विज्ञानिक मत है। गुरू नानक साहिब से ही इसने गरीब, गुलाम, शोषित और अपमानित लोगों को सम्मान दिया। गुरू नानक जी ने ऊँची आवाज़ में कहा :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ।।

नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ।। (वही, पृ. 15)

गुरू नानक जी और बाकी सिक्ख गुरू उच्च जाति से सम्बंधित थे। इसके बावजूद सभी सिक्ख गुरू साहिबान ने कथित नीचे लोगों को अपने गले से लगाया। सिक्ख पंथ से पहले चले भक्ति आंदोलन ने भी यही काम किया था। पर वह आंदोलन सीमित तथा व्यक्तिगत विरोध से उत्पन्न हुआ था। गुरू अर्जुन देव जी ने श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की सम्पादना का काम 1604 ई: में पूरा किया। उन्होंने जहां सिक्ख गुरू साहिबान की वाणी का इस ग्रंथ में दी। भक्त रविदास जी की प्रमाणीक वाणी का मात्र-स्रोत श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी हैं। सिक्ख पंथ ने इन महांपुरुषों की भांति, भक्त रविदास जी का पूरा आदर किया है। इस वाणी को पवित्र मान कर और कल्याणकारी जान कर इसका पाठ किया जाता है और गान भी किया जाता है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में गुरू रामदास जी, गुरू अर्जुन देव जी और भट्ट कवियों ने भक्त जी की महिमा की है। भाई गुरदास जी की रचना में भी भक्त रविदास जी के हवाले प्राप्त होते हैं। जन्मसाखियों में भक्त रविदास जी और गुरू नानक देव जी की काल्पनिक मुलाकात भी दिखवाई गई है। गुरवाणी और भाई गुरदास जी के ऐसे हवाले यहां दिए जा रहे हैं:

गुरू रामदास जी

(क) **रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ।।**

पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ।। (सूही, पृ.733)

(ख) **नामा जैदेउ कबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ।।**

(बिलावलु, पृ. 735)

गुरू अर्जुन देव जी

(क) **रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिन्हि तिआगी माइआ ।।**

परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ।। (आसा, पृ. 487)

(ख) रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ (बसंत, पृ. 1192)

(ग) भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥

ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥ (सारंग, पृ. 1206)

कल भट्ट

गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥ (सवईए, पृ. 1310)

भक्त कबीर

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥

ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥ (सलोक, पृ. 1377)

भाई गुरदास

(क) भगतु भगतु जगि वजिआ चहु चकां दे विचि चमिरेटा ।

पाहणा गंढै राह विचि कुला धरम ढोइ ढोर समेटा ।

जिउ करि मैले चीथड़े हीरा लालु अमोलु पलेटा ।

चहु वरना उपदेशदा गिआन धिआनु करि भगति सहेटा ।

नहावणि आइआ संगु मिलि बानारस करि गंगा थेटा ।

कढि कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा भी भेटा।

लगा पुरबु अभीच दा डिठा चलितु अचरजु अमेटा ।

लइया कसीरा हथु कढि सूतु इकु जिउ ताणा पेटा ।

भगत जनां हरि मां पिउ बेटा ॥ (वार 10 : 17)

(ख) कलजुगि नामा भगतु होइ फेरि देहुरा गाइ जिवाई ।

भगतु कबीरु वरवाणीऐ बंदी रवाने ते उठि जाई ।

धन्ना जटु उधारिआ सधना जाति अजाति कसाई ।

जनु रविदासु चमारू होइ चहु वरना विचि करि वडिआई । (12 : 15)

(ग) भगतु कबीरु जुलाहड़ा नामा छींबा हरि गुण गाई ।

कुलि रविदासु चमारु है सैणु सनाती अंदरि नाई । (25 : 5)

(घ) भगतु कबीरु वरवाणीऐ जन रविदासु बिदर गुरु भाए।

जाति अजाति सनाति विचि गुरमुखि चरण कवल चितु लाए । (23 : 15)

रविदासु दुवंता ढोर नीति तिन्हि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंध का गारा ॥
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥

कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥
हम तउ एक रामु कहि छुटिआ ॥

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंत
नितहि बानारसी आस पासा ॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥

बेगम पुरा सहर को नउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥

भेटा :- आप पढें तथा अन्य लोगों को पढ़ाऐ
यदि चाहे तो आप इस पुस्तिक को छपवा कर
निःशुल्क बटवा सकते हैं।

यानी गुरू ग्रंथ साहिब।

प्रिये पाठकजनों आप के चरणों में विनम्र विनती है कि इस लघु पुस्तिका के अंत में एक वैब साईट का नाम **www.sikhworld.info** लिखा हुआ है यदि आप इस को खोलेगें तो आप इस के **Main Link** में एक उपन्यास **(Novel)** मित्र मण्डली पायेगें यह एक फौजी यथार्त घटना पर अधारित नावल है जो कि रोचकशैली में तो है ही इस के साथ ज्ञान वर्दक तथा मनोरंजन से भरपूर है जो आप की जिज्ञासा को तृप्त करेगा और आप आनंदित होंगे। अतः आप से निवेदन है कि इसे **Download** करके एक बार अवश्य पढ़े।

धन्यवाद

लेखक – जसबीर सिंघ

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : IFSC 0000450 04501570003814